RESEARCH COMMUNICATIONS
(An International Open Access, Peer Reviewed, Multidisciplinary Online Journal)
https://research-communications.cmpcollege.ac.in
ISSN: 2584-1270
Volume: 2, Issue: 1, January-June 2024, pp.252-257

बौद्ध साहित्य में वर्णित प्रमुख खाद्यान्न

डॉ कमल कृष्ण राय

सहायक आचार्य
सी.पी.एम. डिग्री कालेज, इलाहाबाद विश्वविद्यालय
प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

सारांश

बौद्ध साहित्य के अनुसार उस काल में कृषि कार्य करके अनेक प्रकार के फसलों को पैदा किया जाता था। बौद्ध आगमों में मुख्य रूप से धान की फसल का वर्णन अनेक स्थलों पर हुआ है। इससे यह प्रतीत होता है कि उस समय धान की खेती अधिक होती थी और चावल उनका मुख्य आहार था। अंगुत्तर निकाय में एक प्रसंग में भगवान बुद्ध भिक्षुओं से कहते हैं! भिक्षुओं" - चाहे धान की बाली हो या जौ की, वह ठीक से न रखी गयी हो तथा उस पर यदि हाथ या पांव पड़ जाय तो इसकी सम्भावना है कि उससे हाथ या पांव बिंध जायेगा और उनसे रक्त निकल आयेगा। इसी प्रकार जातकों में भी धान की का (सालि) वर्णन मिलता है। प्रस्तुत लेख में बौद्ध साहित्य में वर्णित विभिन्न प्रमुख खाद्यान्नों की विस्तृत समीक्षा की गई है।

मुख्य शब्द: *बौद्ध साहित्य, बौद्ध काल, खाद्यान्न*

प्रस्तावना

कपिजातक में मिलता है कि एक दिन धान कूटने वाली दासी ने धूप में फैलाये हुये अपने धानों को खाने वाली बकरी को जलती लकड़ी से मारा। इससे परिलक्षित होता है कि धान की खेती विशेष रूप से होती थी। इसके बाद हमें जौ का (यव) वर्णन मिलता है। जौ का उत्पादन भी अधिक होता था। इसके अतिरिक्त उरद, मूँग, बाजरा, कपास, गेहूँ, कोदो, तिल, सरसों का भी वर्णन मिलता है। साथ ही साथ सन का भी उल्लेख प्राप्त होता है।

प्रमुख खाद्यान्न

ईख की खेती का भी उल्लेख बौद्ध आगमों में प्रचुर मात्रा में किया गया है। ईख की खेती किससे की जाती है, इसका भी उल्लेख किया गया है। भगवान बुद्ध अंगुत्तर निकाय में भिक्षुओं से कहते हैं, " भिक्षुओं जैसे ! ईख का बीज हो, वह गीली पृथ्वी में गाड़ा गया है, वह जितना भी पृथ्वी-रस को

ग्रहण करता है वह सब मधुर ही होता है। ईख के पेराई का वर्णन भी बौद्ध आगमों में मिलता है। " महाराज। रस निकालने के लिए लोग ईख को कोल्हू में पेरते हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि ईख को उस समय भी कोल्हू में पेरते थे। इस प्रकार हम देखते हैं कि ईख का वर्णन बहुत प्रसंगों पर मिलता है। धान और जौ के साथ ही साथ ईख भी तत्कालीन समय में अधिक मात्रा में उपजाई जाती थी।

फसल के रक्षार्थ बाड़ बाँधे जाने एवं उसकी रखवाली का भी उल्लेख प्राप्त होता है। अर्गुत्तर निकाय में शास्ता एक स्थल पर भिक्षुओं से कहते है कि- भिक्षुओं। चाहे धान की बाली हो या यव, वह ठीक से नहीं रखी गयी तो तथा उस पर यदि हाथ या पांव पड़ जाये तो इसकी सम्भावना है कि उससे हाथ या पांव बिंध जायेगा और उनमें से रक्त निकल आयेगा। इन उद्धरणों के आधार पर यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि बौद्ध युग में धान एवं जौ की खेती सबसे लोकप्रिय था। जातकों में दलहन एवं तिलहन की उपज में तिल एवं मूंग के सर्वाधिक साक्ष्य प्राप्त होते हैं। तिलमुट्ठि जातक से विदित होता है कि एक बुढ़िया द्वारा तिलों को साफ कर फैलाने पर एक विद्यार्थी राजकुमार ने साफ तिलों को देख खाने की इच्छा से एक मुट्ठी तिल चुराकर खा लिया था। तिल की उपज से सम्बन्धित अनेक कथाओं का उल्लेख जातक साहित्य में प्राप्त होते है। तत्कालीन समाज में भोजन के आवश्यक अंग दाल के रूप में मूंग का उपयोग विशेष रूप से किया जाता था। बौद्ध साहित्य में ईख की खेती से सम्बन्धित अनेक उद्धरण प्राप्त होते हैं।' छद्दन्त जातक में विशालकाय ईख के वनों का वर्णन हुआ है। ईख की खेती किस विधि से की जाती थी, बौद्ध साहित्य में वर्णित है। अंगुत्तर निकाय में भगवान बुद्ध भिक्षुओं को सम्बोधित करते हुए कहते है कि भिक्षुओं। जैसे ईख का बीज हो, वह गीली पृथ्वी में मधुर होती है, वह जितना भी पृथ्वी रस को ग्रहण करता है, वह सब मधु होता है। इस प्रकार हम देखते है कि मुख्य फसल के रूप में ईख की भी पर्याप्त मात्रा में खेती की जाती थी। कपास की खेती के उल्लेख भी जातक एवं अन्य बौद्ध साहित्य में वर्णित है। खेतों में कपास की चुंगाई का कार्य अधिकांशतः स्त्रियाँ ही करती थी। महाजनक जातक से विदित होता है कि स्त्रियों द्वारा धुनकी से कपास की धुनाई का कार्य किया जाता था। रीज डेविड्स महोदय का मानना है कि सम्भवतः सर्पप्रथम कपास की खेती की शुरूआत बौद्ध युग से ही हुई क्योंकि इसका प्राचीनतम् उल्लेख भी सूत्र साहित्य एवं बौद्ध ग्रन्थों में ही प्राप्त होता है।

धान और गन्ने के खेतों में लगने वाले रोगों का वर्णन भी बौद्ध आगमों में प्राप्त होता है। जैसे ! आनन्द" किसी लहलहाते धान के खेत को सफेदा नामक रोग लग जाता है तो वह धान का खेत चिरस्थायी नहीं होता। इसी प्रकार किसी लहलहाती ईख के खेत को लाल रोग लग जाता है तो वह ईख का खेत नहीं होता। इससे यह विदित होता है कि धान और ईख की खेती पहले के समय से अधिक होती थी, क्योंकि इनका वर्णन हमें विशेष रूप से उदाहरण के रूप में बौद्ध आगमों में प्राप्त होता है। बौद्ध काल में विविध प्रकार के अन्नों की खेती का उल्लेख प्राप्त है। ईख की खेती के अविष्कारक सूर्यवंशीय राजा

इक्ष्वाकु थे, जिनका राज्य विस्तार सदानीरा बड़ी) गण्डकतक (निश्चित रूप से था, इसीलिए अयोध्या से लेकर कुशीनारा जनपद सहित जो क्षेत्र हैं उसमें आज भी गन्ने की जितनी मिलें हैं उतनी एक ही क्षेत्र में पूरे भारत में कहीं प्राप्त नहीं होती। गौतम बुद्ध के पिता शुद्धओदन थे जिसका अर्थ शुद्ध चावल है। इसलिये इस क्षेत्र में आज भी धान की खेती अधिक होती है जिसका वर्णन विशिष्ट रूप से बौद्ध साहित्य में किया गया है

बौद्ध स्रोतों से ज्ञात होता है कि तत्कालीन कृषक समुदाय ने कृषि के क्षेत्र में पूर्व की अपेक्षा और भी प्रगति की, जिससे कृषि प्रणाली में नवीन युक्तियों का समावेश हुआ। खेतिहारों को खेती के लिए फसलें चुनने की स्वतन्त्रता थी, परिणामस्वरूप कृषक, जलवायु के अनुकूल और उपज की दर के अनुसार अन्नों के उत्पादन के लिए कटिबद्ध हुए। इन उपजों में अन्न की भौतिक जीवन के प्रति उपयोगिता को ध्यान में रखते हुए बृहता की नीति अपनायी जाने लगी तथा आवश्यकता की पूर्ति के लिए फलों एवं वृक्षों को भी महत्त्व दिया जाने लगा। अनाज एवं फल उत्पादन से सम्बन्धित अनेक रोचक एवं मनोरंजनपूर्ण कथाएं जातक साहित्य में मिलती है। बौद्ध काल की प्रमुख उपज धान था। जातक साहित्य में धान की खेती से सम्बन्धित अनेक वर्णन मिलते है। धान के विपुल उल्लेख यह इंगित करते हैं कि इस युग के नागरिकों का सबसे लोकप्रिय एवं मनपसन्द आहार चावल था काम जातक से ज्ञात होता है कि श्रावस्ती वासी एक ब्राह्मण ने अचिरावती नदी के तट पर धान की खेती की थी, परन्तु सम्पूर्ण सौ गाड़ी धान की फसल मूसलाधार वर्षा के कारण बह गयी। कपि जातक से ज्ञात होता है कि एक दिन धान कूटने वाली दासी ने धूप में फैलाये अपने धानों को खाने वाली एक बकरी को जलती लकड़ी मारा। जातक कथाओं में जौ के भी साक्ष्य प्राप्त होते हैं।

उपर्युक्त फसलों के अतिरिक्त दैनिक जीवन निर्वाह से सम्बन्धित अन्य उपज के भी साक्ष्य जातक साहित्य में प्राप्त होते है, इनमें मटर," उड़द, 12 सरसों, मसूर, सन' तथा पान आदि प्रमुख है। तत्कालीन समाज के दैनिक जीवन में इनका उपयोग आमतौर पर किया जाता था।

जातक साहित्य में अन्नों के उत्पादन के साथसाथ- मसालों की खेती के उल्लेख भी प्राप्त होते है। इन मसालों में मिर्च, लहसुन, हल्दी," अदरक, २० हींग, जीरा, पिप्ली, आदि प्रमुख थे। सम्भवतः विभिन्न व्यञ्जनों को तैयार करते समय रसास्वादन के लिए इन मसालों का विशेष आकर्षण रहा होगा।

जातक कथाओं में सब्जी की उपज के भी साक्ष्य प्राप्त होते है। तरकारी बेचने के कई रोचक प्रसंग इन कथाओं में प्राप्त होते है। तरकारी बेचने वालों को कुंजडे शब्द से सम्बोधित किया गया है। इन उपजों में खीरे, लौकी, कद्दू आदि सब्जियों का उल्लेख प्राप्त होता है।

निष्कर्ष

अत: कह सकते है कि बौद्ध साहित्य में विभिन्न प्रकार के खाद्यान्नों को उगाया जाता था जिसमें चावल, ईख, मटर," उड़द, सरसों, मसूर, सन', पान, मिर्च, लहसुन, हल्दी, अदरक, हींग, जीरा, पिप्ली, उरद, मूँग, बाजरा, कपास, गेहूँ, कोदो, तिल, सरसों, खीरे, लौकी, कद्दू आदि प्रमुख थे।

सन्दर्भ सूची

1. संयुत्तनिकाय, भाग-2, पृ० 830; जातक, भाग-1, पृ० 36/328
2. जातक, भाग-1, पृ० 36/327
3. अवदानशतक, 1/293/9; सुत्तनिपात, पृ०17
4. जातक, भाग-4, 459/314
5. सुत्तनिपात, पृ० 15; इन्द्रनाम ब्राह्मणावदान, पृ० 47
6. सुत्तनिपात, कसिभारद्वाजसुत्त, पृ० 15; दिव्यावदान, 47/32 7. जातक, भाग 5, 524/134; संयुत्तनिकाय, भाग-1, पृ० 138
8. संयुत्तनिकाय, भाग-2, देसनासुत्त, पृ० 583
9. ललितविस्तर, पृ० 128/16
10. महावस्तु, जिल्द 3, 50/15
11. संयुत्तनिकाय, देसनासुत्त, पृ० 583
12. जातक, भाग-5, 502/11
13. कौटिल्य अर्थशास्त्र, दूसरा अधिकरण, पृ० 100, 238, 244
14. दिव्यावदान, 414/24-25
15. तत्रैव, 415/20
16. तत्रैव, 415/21
17. सुत्तनिपात, भाग-1, पृ० 138
18. सुत्तनिपात, भाग-1, पृ० 139
19. दिव्यावदान, पृ० 415/22-23
20. अंगुत्तरनिकाय, भाग-1, पृ० 247
21. अंगुत्तरनिकाय, भाग-4, पृ० 256
22. दिव्यावदान, 43/23
23. संयुत्तनिकाय, पृ० 39
24. जातक, भाग-5, 505/33
25. मज्झिमनिकाय, पृ० 359; विनयपिटक, चुल्ल